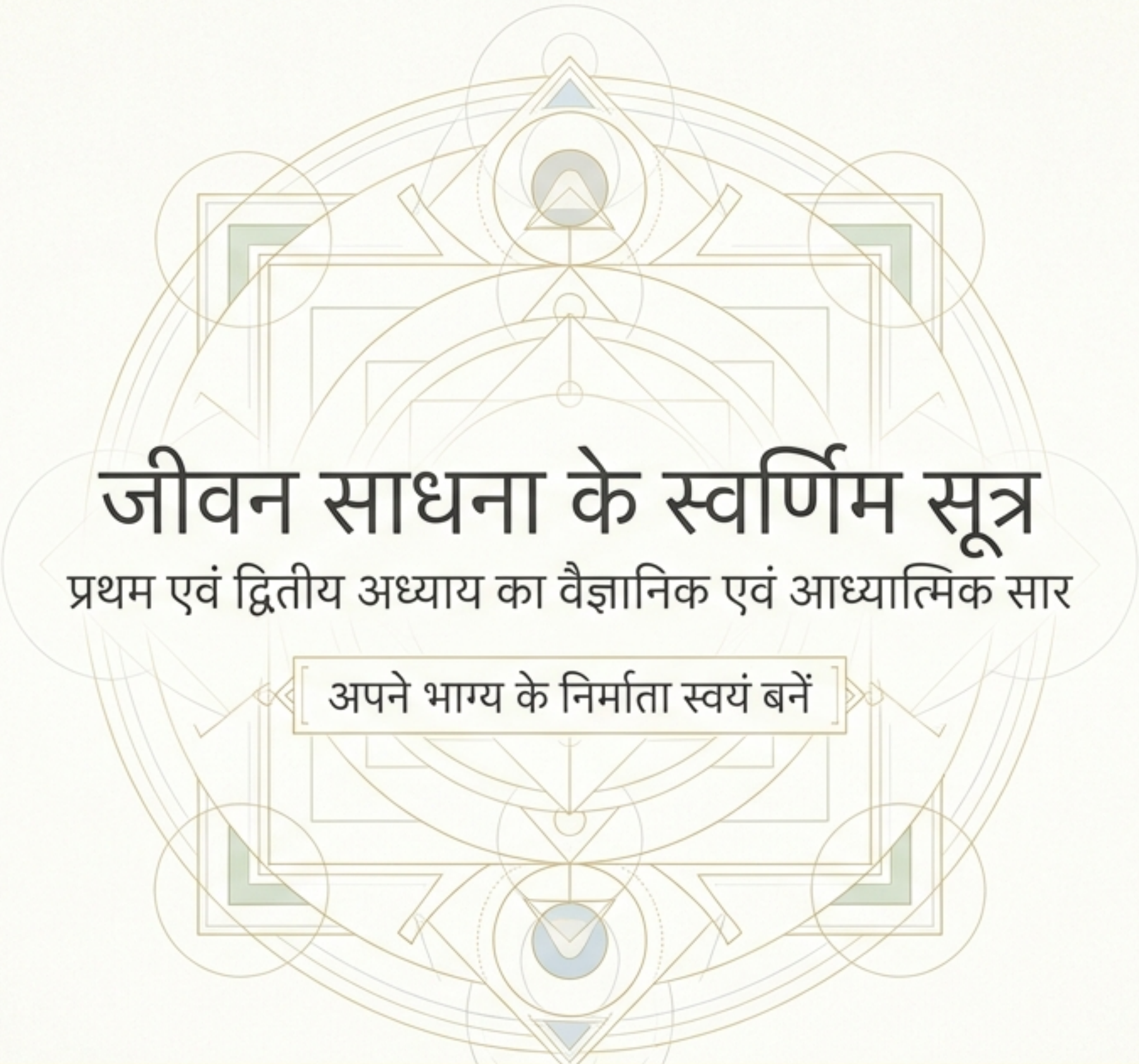




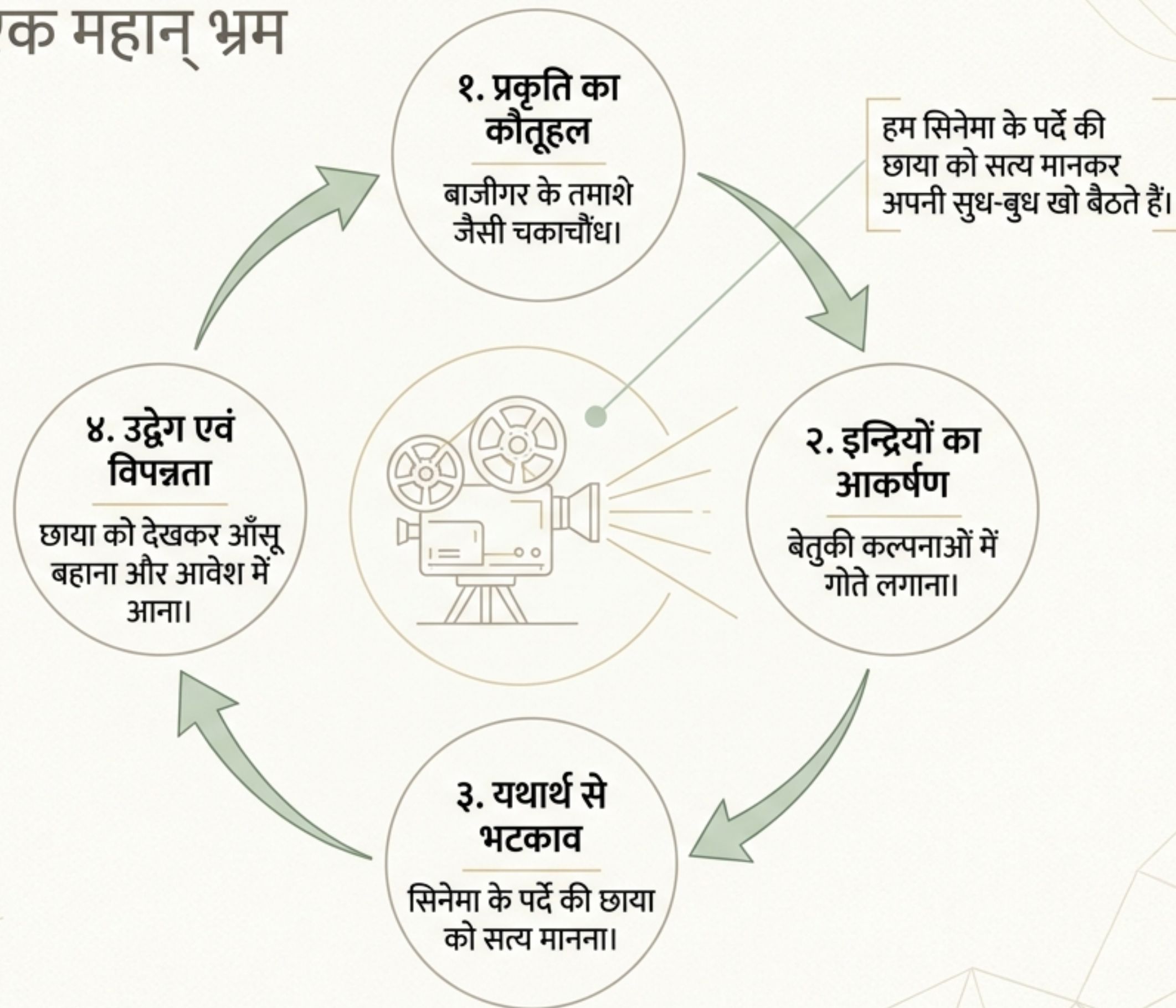
जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र

प्रथम एवं द्वितीय अध्याय का वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक सार

अपने भाग्य के निर्माता स्वयं बनें

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रकृति का प्रपंच: एक महान् भ्रम



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-ज के बीच में पहुँचना ही चाहिए आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगक्रुषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मकड़ी का दृष्टांत: उलझना और सुलझना

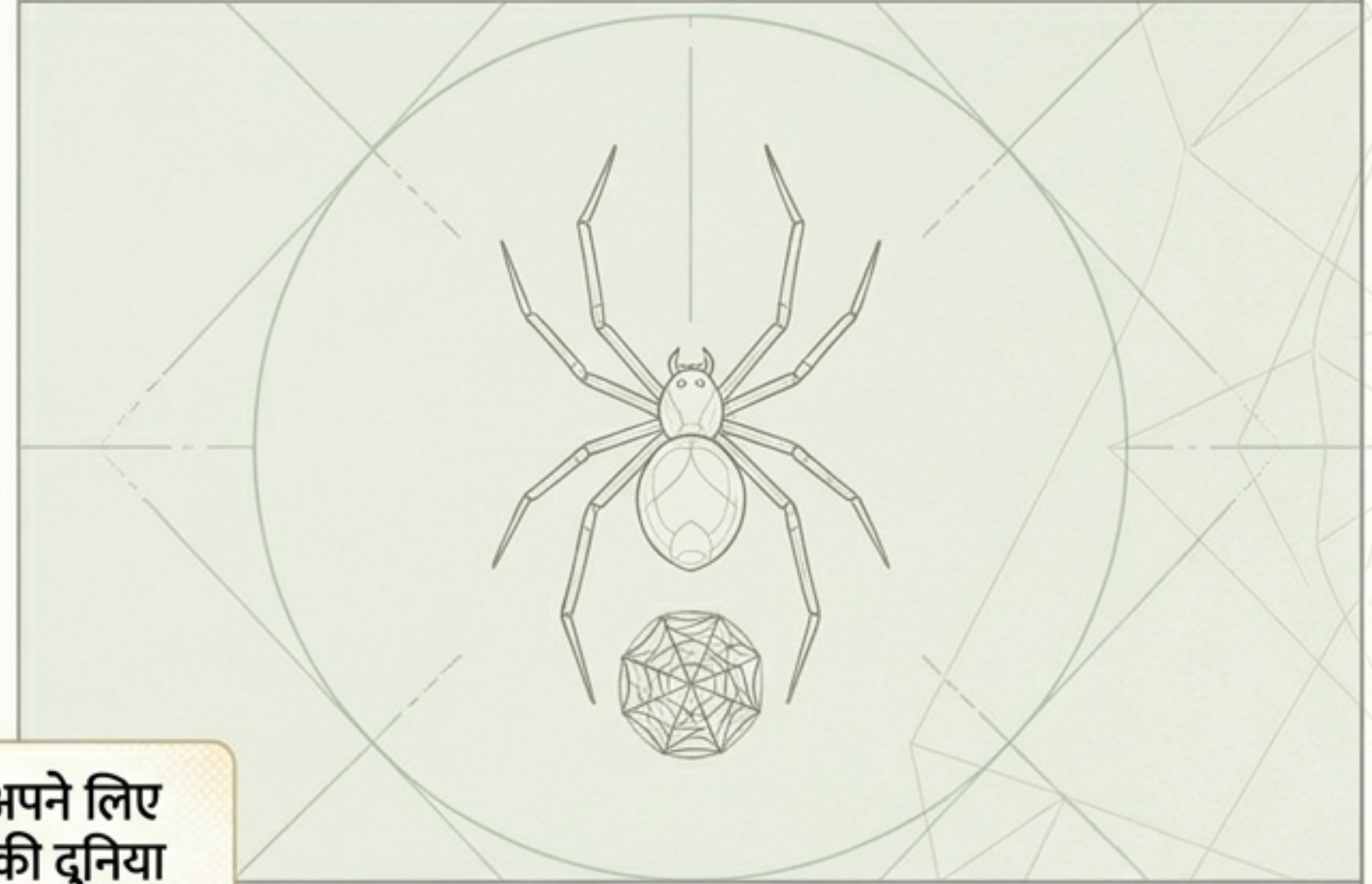
उलझना (Entanglement)



मकड़ी अपना जाल स्वयं बुनती है।
उसे बन्धन समझकर रोती और कलपती है।

हर मनुष्य अपने लिए
अपने स्तर की दुनिया
अपने हाथों आप रचता है।
उसमें किसी दूसरे का
हस्तक्षेप नहीं है।

सुलझना (Liberation)



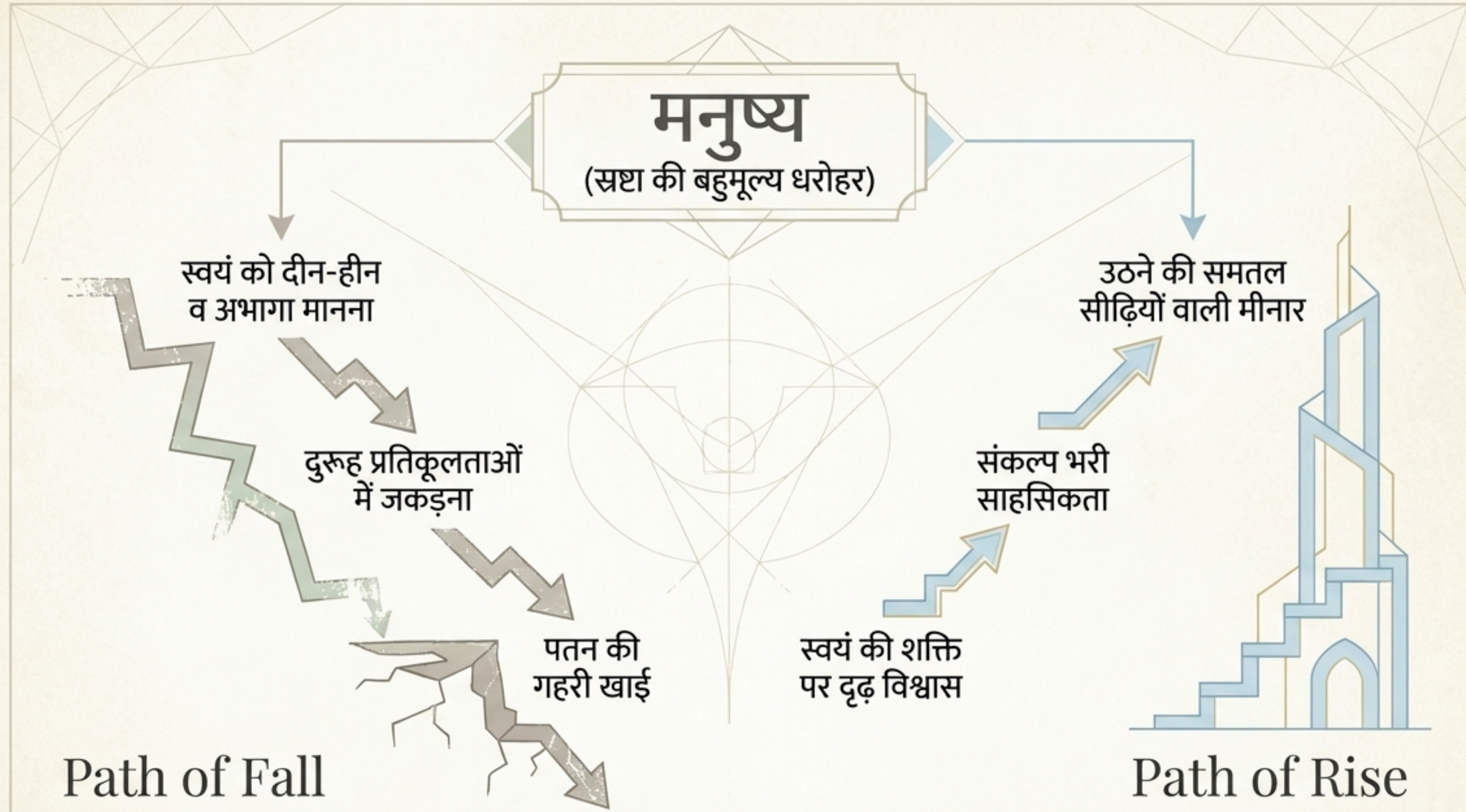
अनुभूति होने पर समूचा मकड़जाल समेट कर पेट में
निगल लेती है और सदा के लिए मुक्त हो जाती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों! कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रानिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के सं

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि सेपेप कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है।

ईश्वरीय सहायता का विज्ञान

पुरुषार्थ और मनोबल
आगे बढ़ने का दृढ़ संकल्प।

चिरस्थायी
परिणाम

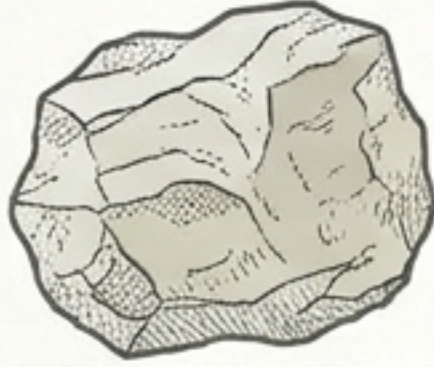
प्रकृति / ईश्वर की कृपा
जो केवल पात्र को मिलती है।

ईश्वर मात्र उन्हीं की
सहायता करता है, जो अपनी
सहायता आप करते हैं।
दीन-दुर्बलों को तो प्रकृति भी
उपेक्षित छोड़ देती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों! कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के सं

परिष्कार का विज्ञान: भौतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टांत

कोयला



[गहरा दबाव / गलाई]



हीरा

मैला पानी



[ताप / वाष्पीकरण]



स्रवित जल
(इन्जेक्शन के लिए उपयुक्त)

भटका हुआ
मनुष्य



[कषाय-कल्मषों का त्याग]



देवता

अष्टावक्र और गाँधी की दृश्यमान कुरूपता महत्वपूर्ण नहीं थी; उनके अन्तःकरण का सौन्दर्य अतुलित था।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि सेपेप कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वेदान्त विज्ञान के चार स्वर्णिम सूत्र



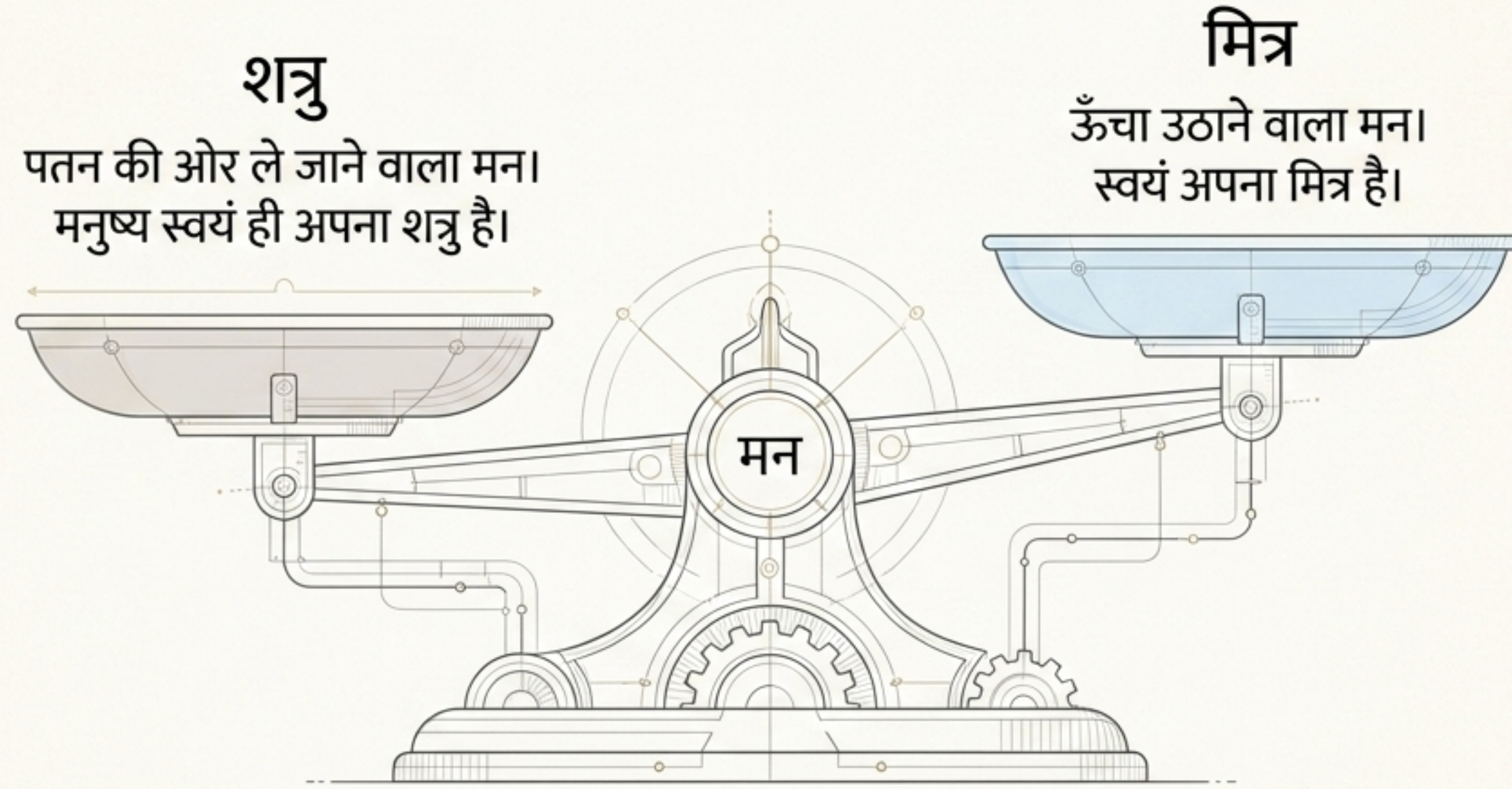
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों! कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के सं. NotebookLM

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से—

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जनन-शरीर ही जिन्दा रहेगा। और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से माहिणलें ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

गीता का तत्त्वदर्शन: मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण



शत्रु
पतन की ओर ले जाने वाला मन।
मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु है।

मित्र
ऊँचा उठाने वाला मन।
स्वयं अपना मित्र है।

मनुष्य की एक मुट्ठी में स्वर्ग है और दूसरी में नरक।
वह इनमें से किसी को भी खोलने के लिए स्वतंत्र है।

ईश्वर की खोज: जड़ बनाम चेतन

जड़



बाहरी भाग-दौड़, केवल प्रतिमाओं तक सीमित,
भावुकता भड़काना।

परिणाम: दूरवर्ती भटकाव।

चेतन



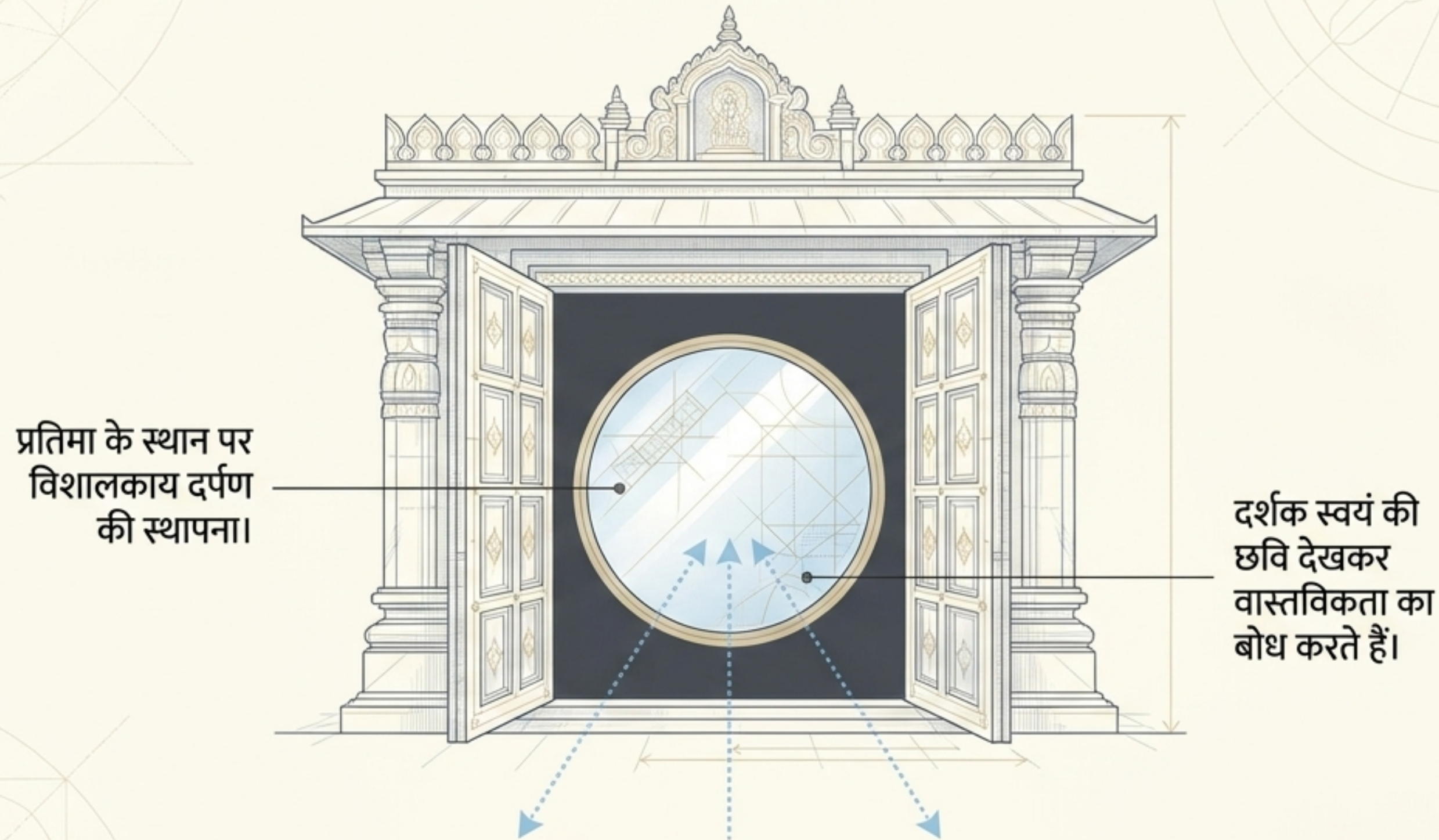
अपने ही अन्तराल में प्रवेश। चेतना का चेतना के
साथ मिलन (जैसे दूध में पानी का घुलना)।

परिणाम: सच्चा साक्षात्कार।

ईश्वर सर्वव्यापी है, पर उससे मिलने का सबसे निकटवर्ती स्थान अपना 'अन्तःकरण' ही है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सूफी संत का दृष्टांत: मन्दिर और दर्पण



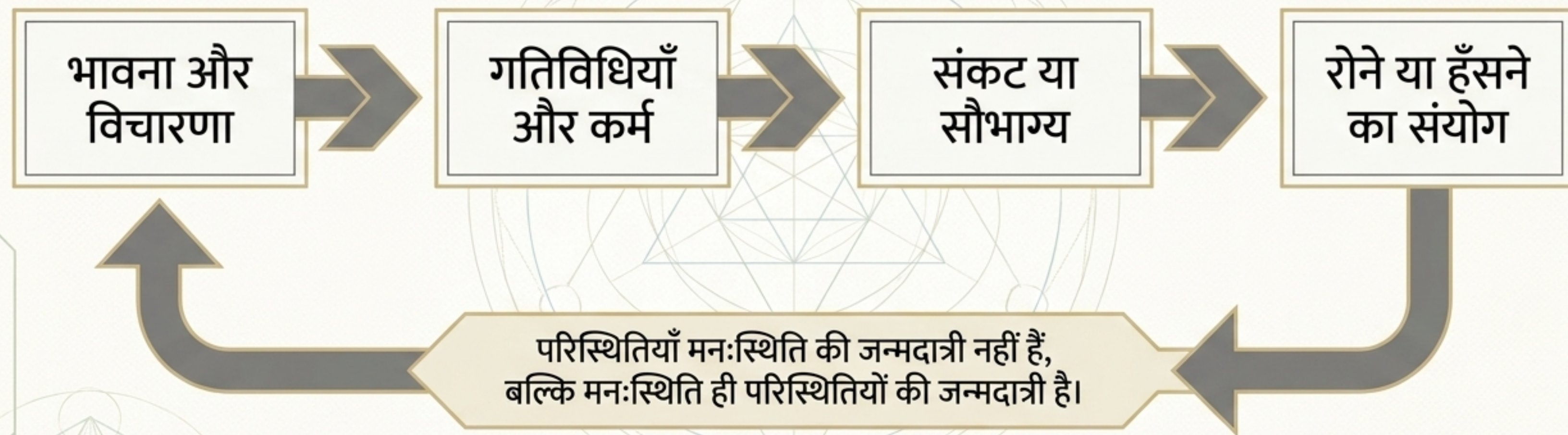
ईश्वर का निवास इसी काय कलेवर के भीतर है।
आत्मसत्ता का परिष्कार ही परमात्म सत्ता का विकास है।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश जन-
जन के बीच में पहुँचना
ही चाहिए और आप
सबसे कहियेगा — सब
बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास
करें॥”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री
परिवार के संस्थापक)

मनःशास्त्र का विज्ञानः कार्य-कारण शृंखला



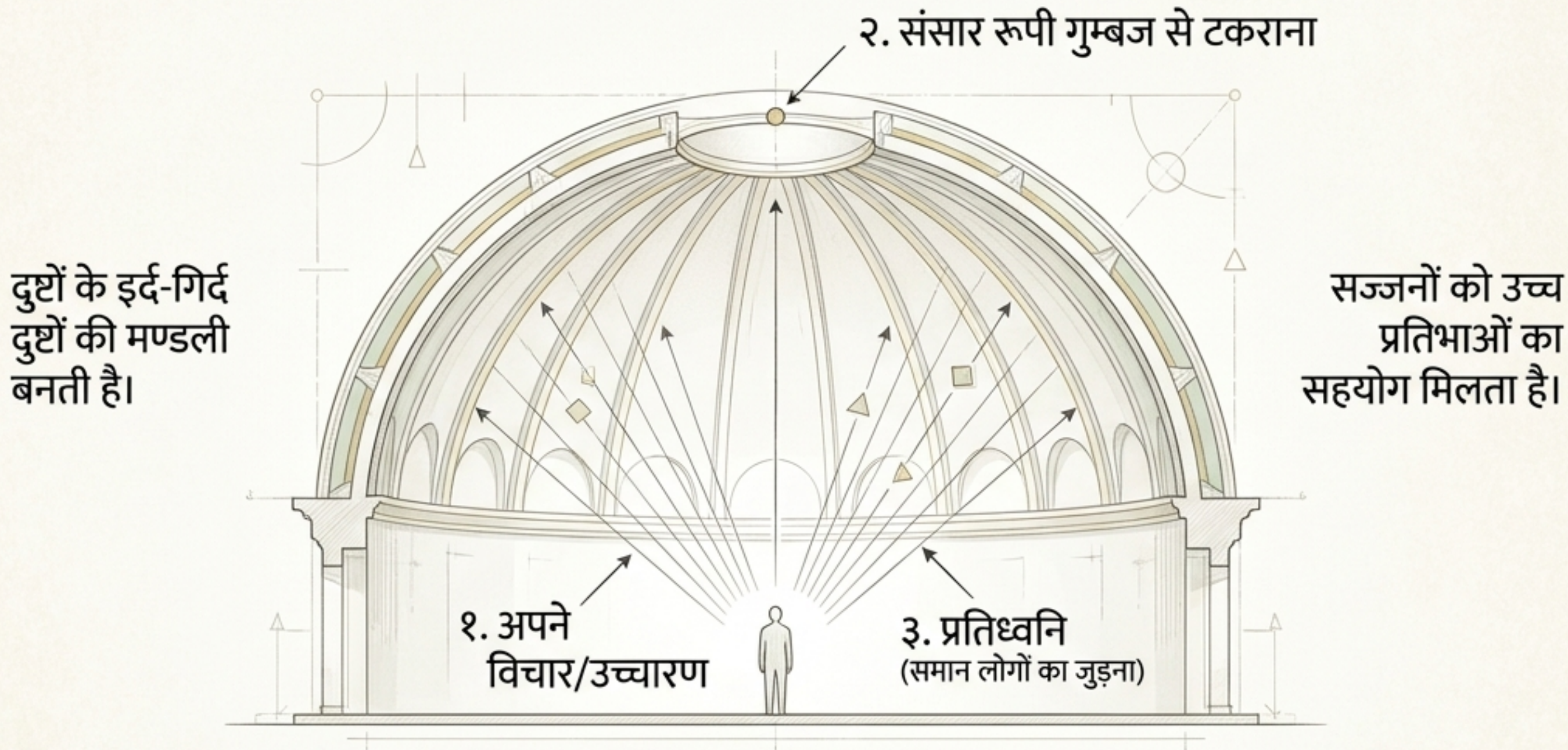
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेझी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

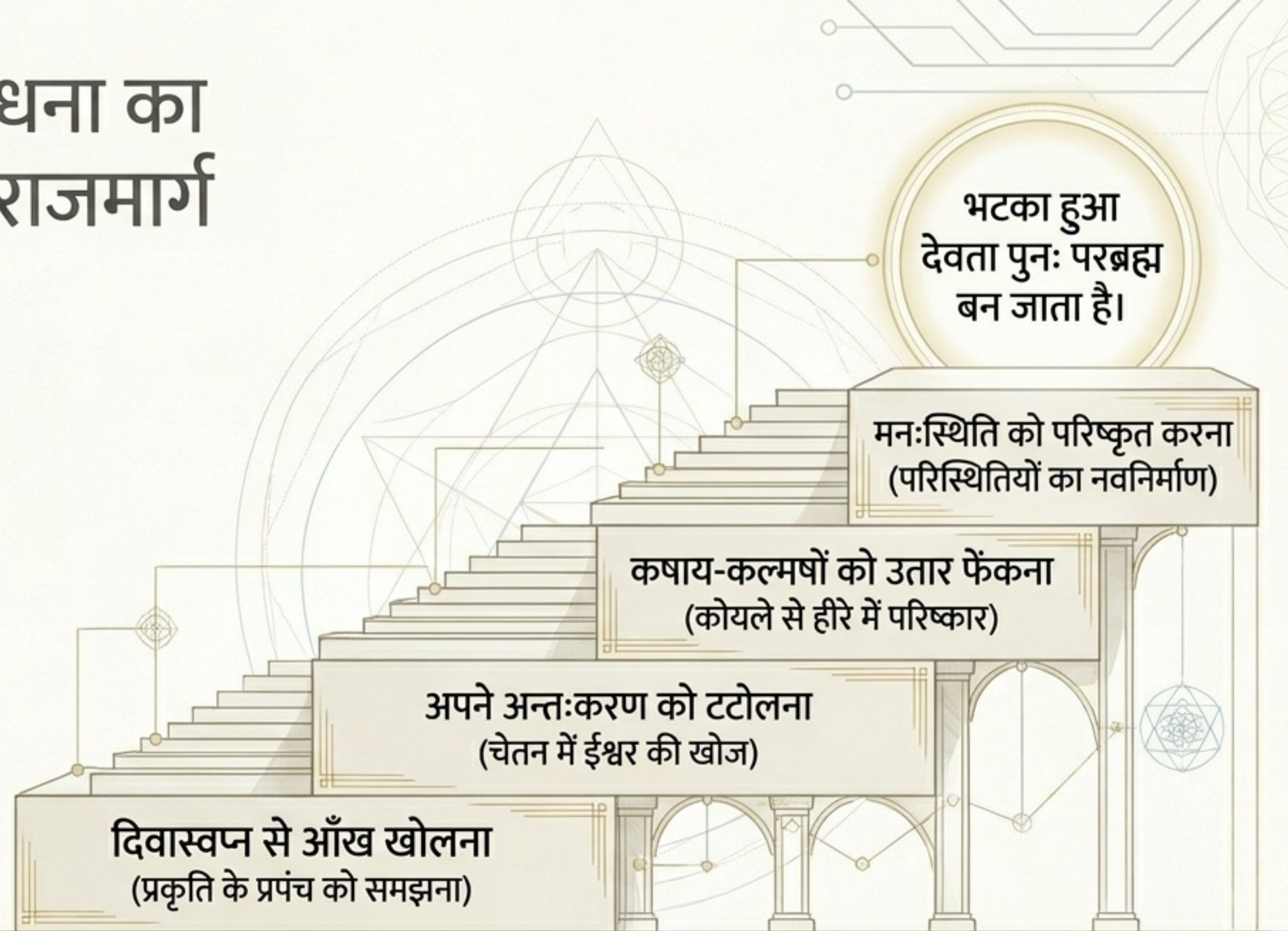
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

संसार: एक गुम्बज की प्रतिध्वनि



अपना सुधरा प्रतिबिम्ब ही व्यक्तियों और परिस्थितियों में झलकता दिखाई पड़ता है।

जीवन साधना का सुनिश्चित राजमार्ग



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)